हिंदी नाटक का विकास , भाग-1

हिंदी प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष, पत्र-4

यद्यपि हिंदी नाटक का विकास काफी पूर्व से ही होने लगता है। गीतिनाट्य की परंपरा में आदिकालीन, भक्तिकालीन, रीतिकालीन साहित्य को देखने पर भी कई सारे काव्य मिल जाते हैं। भारतीय साहित्य में अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा नाटक का विकास ही पहले माना जाता है। संस्कृत काव्य शास्त्रीय पुस्तकों में सबसे प्राचीन रूप में भरतमुनि का नाट्यशास्त्र हीं प्राप्त है। लेकिन यहां विषय वस्तु के अनुरूप हिंदी नाटक के विकास के उस चरण पर ही चर्चा की गई है जो खड़ी बोली हिंदी के रूप में लिखे गए हैं। जिसकी शुरुआत भारतेंदु युग से कुछ वर्ष पहले से मानी जाती है।

हिंदी की नाटक परंपरा निर्माण की दृष्टि से दो रूपों में चले अनूदित एवं मौलिक इन दोनों परंपराओं में आगे चलकर क्रमशः राजा लक्ष्मणसिंह कृत 'शकुंतला' नाटक (1861) और भारतेंदु के पिता गोपालचंद्र कृत 'नहुष' (1841) नाटकों का नाम आता है | 19वीं शताब्दी में ऐंग्लो-सैक्शन संस्कृति की संदेशवाहक अंग्रेज जाति के साथ हिंदी भाषा-भाषियों का संपर्क स्थापित हुआ और इससे देश में नई जागृति आई | अपना राज्य स्थापित करने के बाद अंग्रेजों ने नवीन या आधुनिक शिक्षा का प्रचार किया और अनेक स्कूलों, कॉलेजों की स्थापना की | इन संस्थाओं में अंग्रेजी साहित्य का भी अध्ययन होता था |

अंग्रेजों के पास अपना समुन्नत नाट्य साहित्य था और इसके अतिरिक्त उन्होंने मनोरंजन के लिए कोलकाता, मुंबई, मद्रास, पटना आदि बड़े-बड़े नगरों में अभिनयशालाएं भी स्थापित की | इस प्रकार अंग्रेजी के अध्ययन और अंग्रेजी के संपर्क के फलस्वरुप नाट्य रचना को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ | अनुकूल वातावरण पाकर हिंदी नाट्य साहित्य का जन्म हुआ | सन् 1868 में प्रकाशित शीतला प्रसाद त्रिपाठी का महत्वपूर्ण नाटक 'जानकीमंगल' खड़ी बोली का साहित्यिक नाटक है | 1862 ई० में राजा लक्ष्मण सिंह की नाट्यकृति 'शकुंतला' तथा 1868 ई० में भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत 'विद्यासुंदर' का प्रकाशन हो चुका था, पर खड़ीबोली में लिखित होने के बावजूद उन्हें खड़ी बोली का प्रथम नाटक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह संस्कृत के

'अभिज्ञानशकुंतलम्' (कालिदास) एवं संस्कृत 'चौरपंचाशिका' के बांग्ला-संस्करण के हिंदी रूपांतरण के रूप में हिंदी पाठकों तथा दर्शकों के सामने आए | इस तरह देखा जाए तो 'जानकीमंगल' ही खड़ी बोली हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक ठहरता है | इस प्रकार हिंदी नाट्य साहित्य का क्रमबद्ध इतिहास 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से माना जाता है | हिंदी नाट्य साहित्य का इतिहास क्रमशः इस प्रकार है -

भारतेंदु युग - इस युग के नाटककारों में भारतेंदु का नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है | भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों में अतीत का गौरवगान भी है और युग की समस्याओं का प्रस्तुतीकरण भी | उन्होंने युगानुरूप नई नाट्य परंपरा का समारंभ किया | अंधेरनगरी, प्रेमयोगिनी और भारत दुर्दशा हिंदी के प्रथम राजनीतिक नाटक है | इनमें 'अंधेर नगरी' काव्य और प्रयोग की दृष्टि से आधुनिक नाटक है | इस नाटक में तत्कालीन शासन व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया गया है | यह व्यंग्य नाटक की पूरी संरचना में रचा-बसा है | इस नाटक पर नौटंकी का प्रभाव परिलक्षित होता है | इसमें संस्कृत नाट्य-परंपरा, लोकनाट्य-परंपरा और पाश्चात्य रंग-कल्पना का सुंदर समन्वय हुआ है |

भारतेंदु युग में पौराणिक, ऐतिहासिक, रोमानी, समसामयिक विषयों से संबद्ध, प्रहसन एवं प्रतीकवादी नाटक लिखे गये |

पौराणिक नाटकों में चंद्रावली (भारतेंदु), ललिता (अंबिकादत्त व्यास), उषाहरण (कार्तिक प्रसाद खत्री), प्रद्युम्न-विजय, रुकमणी-परिणय (हरिऔध) पह्लादचरित (श्रीनिवास दास) और नल-दमयंती-स्वयंवर (बालकृष्ण भट्ट) उल्लेखनीय है |

ऐतिहासिक नाटकों में नीलदेवी (भारतेंदु), संयोगिता-स्वयंवर (श्रीनिवास दास), अमरसिंह राठौर (राधाचरण गोस्वामी) तथा महाराणा प्रताप (राधाकृष्ण दास) महत्वपूर्ण है |

रणधीर-प्रेममोहिनी, तप्तासंवरण (श्रीनिवास दास), मयंक मंजरी, प्रणयिनी-परिणय (किशोरीलाल गोस्वामी) और लावण्यवती सुदर्शन (शालिग्राम शुक्ल) प्रेम-प्रधान रोमानी नाटक हैं | 'रणधीर-प्रेममोहिनी' को हिंदी का प्रथम दुःखांत नाटक माना जाता है |

समसामयिक विषय पर लिखे गए नाटकों में भारत-दुर्दशा (भारतेंदु), भारत-सौभाग्य

(अंबिकादत्त व्यास), भारत-हरण (देवकीनंदन त्रिपाठी) और विधवा-विवाह (काशीनाथ खत्री) उल्लेखनीय है | इन नाटकों में देश की तत्कालीन व्यवस्था का मार्मिक चित्रण हुआ है |

अंधेरनगरी, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (भारतेंदु), आचार्य विडंबन (बालकृष्ण भट्ट), कलिकौतुक रूपक (प्रताप नारायण मिश्र) में हास्य एवं व्यंग के माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों पर जोरदार प्रहार किए गए हैं | भारतेंदु युग में 'अद्भुत नाटक' (कमलाचरण मिश्र), न्याय सभा (रत्नचंद्र) और विज्ञान (शंकरानंद) जैसे प्रतीकवादी नाटक लिखे गये | भारतेंदु ने भारत-दुर्दशा में ही प्रतीक विधान के माध्यम से प्रतीकवादी नाट्य लेखन की परंपरा शुरू कर दी थी |

द्विवेदी युग - इस युग में बद्रीनाथ भट्ट जैसे प्रतिभाशाली नाटककार की उपस्थिति हिंदी नाट्यविधा की समृद्धि में सहायक सिद्ध होती है | 'चुंगी की उम्मीदवारी' उनका महत्वपूर्ण प्रहसन है | 'कुरुवन' उनका पौराणिक नाटक है | इसी युग में प्रसाद ने नाट्य-लेखन प्रारंभ किया था | उनका करुणालय 1912 ई० में तथा राज्य से 1914 ई० में प्रकाशित हुआ | वृंदावन लाल वर्मा का प्रसिद्ध नाटक 'सेनापति ऊदल' भी 1909 ई० में इसी युग में आया | इस युग में अनेक रोमांचकारी रंगमंच के नाटक व्यवसाय नाटक मंडलियों के लिए लिखे गए | ऐसे नाटक कारों में नारायण प्रसाद, आगा मोहम्मद, राधेश्याम कथावाचक, मुंशी विनाशक प्रसाद आदि के नाम स्मरणीय हैं |

प्रसाद युग - हिंदी कथा क्षेत्र में जो स्थान प्रेमचंद का है, नाटक के क्षेत्र में लगभग वही स्थान जयशंकर प्रसाद का है | प्रसाद ने ऐतिहासिक, पौराणिक, समस्या प्रधान, प्रगीतात्मक एवं गीतिनाट्य शैली में अनेक नाटक लिखें | सज्जन, कल्याणी, परिणय, प्रायश्चित, करुणालय, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, धुव्रस्वामिनी, एक घूंट, कामना और राजश्री इनकी प्रसिद्ध नाट्य कृतियां हैं | प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों के चरित्र और कथानक भले ही ऐतिहासिक हैं, पर वे आधुनिक समस्याओं के समानांतर ही सृष्ट हैं | 'स्कंदगुप्त' नाटक में भारतीय एवं पाश्चात्य नाटक पद्धतियों का सुंदर समन्वय हुआ है | नाट्य शिल्प की दृष्टि से 'स्कंदगुप्त' प्रसाद के सर्वोत्तम नाट्य कृति है | प्रसाद के बाद छायावादी युग के दूसरे महत्वपूर्ण नाटककार 'लक्ष्मी नारायण मिश्र' हैं | उन्होंने सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा समस्या-प्रधान नाटकों का प्रणयन किया | उनके प्रसिद्ध

नाटक - अशोक, संन्यासी, मुक्ति का रहस्य, सिंदूर की होली, अपराजित, दशाश्वमेघ, नारद की वीणा, गुड़िया का घर आदि हैं | हिंदी नाटक में यथार्थवादी युग का आरंभ मिश्र जी के नाट्य लेखन से ही माना जाता है | उनके नाटकों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं विशेष कर नारी समस्याओं को आधार बनाया गया |

प्रसादोत्तर युग - प्रसादोत्तर काल में सेठ गोविंद दास, वृंदावनलाल वर्मा, उपेंद्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, उदय शंकर भट्ट, आदि नाटक का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है | गोविंद बल्लभ पंत भी प्रसादोत्तर काल के प्रसिद्ध नाटककारों में हीं आते हैं | उनके नाटकों में इतिहास और कल्पना का अद्भुत सामंजस्य है | इनकी प्रसिद्ध नाटक कृतियां - कंजूस की खोपड़ी, वरमाला, राजमुकुट, अंगूर की बेटी, सिंदूर-बिंदी, ययाति आदि हैं |

उदय शंकर भट्ट की गीतिनाट्य एवं भावनाट्य अत्यधिक सफल हुए | उनके ऐतिहासिक नाटकों में विक्रमादित्य, दाहर अथवा सिंध पतन विशेष प्रसिद्ध है | सागर-विजय और अंब उनके पौराणिक नाटक हैं | मत्स्यगंधा, राधा, विश्वमित्र, कालिदास, मेघदूत आदि प्रसिद्ध गीतिनाट्य हैं | शक-विजय, क्रांतिकारी, नया समाज तथा पार्वती उनके सफल ऐतिहासिक एवं सामाजिक नाटक हैं |

क्रमशः

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना ।